नर्सरी मालिकों द्वारा आयुर्वेद का प्रचार – एक सामाजिक दायित्व

युद्धवीर कुमार भून
''वृक्ष एवं पर्यावरण मित्र'' 35 ए/2, मियांवाली कालोनी, गुड़गांव – 122001

हम भारतीय आयुर्वेद को ''जीवन का विज्ञान'' के रूप में जानते हैं और आज आयुर्वेद सारे विश्व में सबसे पुरातन, वैज्ञानिक एवं पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करने वाली पद्धति के रूप में माना जा रहा है। यह हमारा विज्ञान उतना ही पुराना है जितना इस पृथ्वी पर मानव का इतिहास। आज आयुर्वेद का वैश्वीकरण हो रहा है। आयुर्वेद पद्धति पौधों पर आधारित है और आज विश्व के विकसित देशों के लोग भी अपने स्वास्थ्य की देखरेख जड़ी–बूटियों द्वारा ही करना चाहते हैं। WHO द्वारा संचालित ''सबको स्वास्थ्य – 2000 तक'' कार्यक्रम के असफल होने का मूल कारण है आधुनिक स्वास्थ्य पद्धति ऐलोपैथी। क्योंकि आधुनिक स्वास्थ्य पद्धति सभी को स्वास्थ्य प्रदान नहीं कर सकती, विशेषतः विश्व के गरीब देशों में। यह आधुनिक स्वास्थ्य पद्धति बहुत महंगी है और केवल समाज के उच्च वर्ग के लोगों के लिए है। आज जो दवा किसी बीमारी के लिए सुझाई जाती है, बाजार में उतारे जाने के कुछ वर्षो पश्चात् ही उसको यह कह कर वापस ले लिया जाता है की इसके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव है। इस आधुनिक प्रद्धति में एक रोग ठीक होता है तो दूसरा रोग शरीर में इनके Side effect के कारण पैदा हो जाता है। हर तीसरा अमेरिकी इन आधुनिक दवाईयों के प्रयोग से परेशान है। क्योटा विश्वविद्यालय में 2000 में आयोजित एक महासम्मेलन में यही निष्कर्ष निकला कि यदि विश्व में सभी को स्वास्थ्य प्रदान करना है तो वह केवल पारम्पारिक पद्धति द्वारा ही प्रदान किया जा सकता हैं। विश्व की 85 प्रतिशत जनसंख्या अपने स्वास्थ्य की देखरेख इन्हीं Traditional System of Medicine के द्वारा ही करती है।

चीन ने अपने देश में अपनी ही पुरातन पद्धति Chinese System of Medicine (जो कि पूर्णतः जड़ी–बूटी आधारित है और उतनी ही पुरानी है जितना कि हमारा आयुर्वेद) को लोकप्रिय बनाया और अब सारे विश्व में इसकी मांग बढ़ रही है। चीन में प्रत्येक वह डाक्टर जो पंचवर्षीय पाठ्यक्रम MBBS का अध्ययन करता है उसको एक वर्ष Chinese System of Medicine भी पढ़ना पड़ता है और डाक्टर बनने पर ग्रामीण क्षेत्रों में नौकरी के दौरान बीमारी का इलाज करते समय 60 प्रतिशत दवाईयां Chinese System की लिखनी होती हैं और यदि शहरी क्षेत्रों में हो तो 40 प्रतिशत दवाईयॉ Chinese System की लिखनी होती हैं। यही नहीं वो सभी सैलानी जो चीन की प्रसिद्ध दीवार देखने आते हैं उनको Chinese System of Medicine की उपलब्धियों के बारे में भी पूरी जानकारी देते हैं। इसी कारण आज विश्व के सभी देशों में यह पद्धति फैल रही है। यही नहीं भारत सरकार CSIR की अनेक प्रयोगशालाओं ;जिसमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकि के सभी विषय होते हैं में जितनी धन राशि लगाती है चीन सरकार उतनी ही धन राशि केवल Chinese System of Medicine के अनुसंधान एवं विकास पर खर्च करती है। इसी कारण आज चीन हमसे 20 वर्ष आगे है। परन्तु हमारा आयुर्वेद भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अंतर मात्र इतना है कि हमने इसको अपने तक ही सीमित रखा। विश्व में इसको नहीं पहुंचाया। इसमें उस स्तर का अनुसंधान एवं विकास कार्य नहीं किया जितना कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिए था। चीनियों ने अपनी पद्धति को पूर्ण वैज्ञानिक ढंग से विकसित किया है। पिछले कुछ वर्षो से भारत सरकार भी आयुर्वेद संबंधी अनुसंधान एवं विकास कार्यों की ओर काफी प्रयत्नशील हो रही है, क्योंकि विश्व की मंडियों में हमें भी अपना स्थान बनाना है।

चाइनीज दवा जिनसंग एक जड़ी–बूटी है तथा गहन अनुसंधान के पश्चात् ही आज सारे विश्व में उसकी अत्यधिक मांग है। परन्तु हमारी अपनी जड़ी–बूटी अश्वगंधा जो कि दवाई के रूप में जिनसंग के मुकाबले कहीं अधिक प्रभावशाली एवं सस्ती और उगाने में भी आसान है, उसको हम विश्व तक नहीं ले जा सके क्योंकि उस पर उतना उच्च स्तरीय वैज्ञानिक अनुसंधान नहीं हो पाया जितना कि जिनसंग पर हुआ। सन् 2002 में विश्व की मंडियों में जड़ी–बूटियों का सालाना व्यापार रू0 66000 करोड़ का आंका गया। जो कि प्रति वर्ष 10–15 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा हैं। चीन वालों ने पहले से ही इसके बड़े हिस्से पर अच्छे ढंग से अपनी पकड़ बनाई हुई है। भारतीयों की इस व्यापार में भागीदारी मात्र एक प्रतिशत है। इतने बड़े जड़ी–बूटी बाजार पर पकड़ बनाने के लिए भारत सरकार ने 2002 में National Medicinal Plants Board (NMPB) की स्थापना की और अब लगभग सभी प्रान्तों में State Medicinal Plants Boards काम कर रहे हैं। अक्टूबर 2004

तक NMPB द्वारा 11,000 हेक्टेयर भूमि पर 30% subsidy द्वारा औषधीय पौधों की Contractractual farming कराई जा रही है। इसमें 32 मुख्य पौधे हैं जिनकी अत्यधिक मांग है। इतना ही क्षेत्र *In-situ* conservation के तहत कृषि विश्वविद्यालयों, वन विभागों, NGOs, धार्मिक संस्थानों में Herbal Gardens के रूप में है ताकि लोगों में इन औषधीय पौधों की खेती करने के प्रति जागरूकता पैदा की जा सकें। परन्तु अभी यह आंकना बाकी है कि सन् 2002 से शुरू यह NMPB की आकांक्षा भरी परियोजना जिसमें कई हजार करोड़ रू0 (सार्वजनिक सम्पति) के रूप में खर्च हुए हैं, उसके कितने अच्छे परिणाम आते हैं। अच्छा होगा यदि State Medicinal Plants Board के सदस्य सचिव इस लेख को पढ़ने के बाद एक लेख लिखें कि उनके क्षेत्रों में कितने किसानों ने वास्तविकता में इस 30% subsidy का पूर्ण निष्ठा के साथ उपयोग किया, क्योंकि CEO, NMPB ने अभी तक हमारे पत्र का कोई जवाब नहीं दिया है।

जब विश्व की मंडियों में इन सभी औषधीय पौधों की मांग बढ़ रही है। किंतु हमें पहले अपने ही देश में आंतरिक मंडी की मांग की भरपाई करनी होगी। इसकी अपने ही देश में आंतरिक मांग बढ़ानी होगी। 80–90 प्रतिशत स्वदेशी और विदेशी मंडियों की मांग की भरपाई केवल जंगलों में प्राकृतिक रूप से उगने वाली जड़ी–बूटियों से होती है। हालांकि उनके दोहन पर रोक है। परन्तु वह तो कागजों पर है। अरावली के पहाड़ों से ना जाने कितने ट्रक भर कर अडूसा, पसर, कटेहरी का दोहन हो रहा है? परन्तु क्या कोई ठेकेदार इन औषधीय पौधों के बीज इन जंगलों में विखेरने पर कुछ खर्चा करता है। हम अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का दोहन कर रहे हैं। खारी बावली दिल्ली में बैठे बड़े–बड़े लक्ष्मी उपासक व्यापारी इन्हीं जंगलों से उखाड़ी गई जड़ी–बूटियों द्वारा लखपति/करोड़पति बन गए। कितनों ने जंगलों में जाकर पौधे/वृक्षारोपण किया है? कितनों ने सर्पगंधा के बीज/अश्वगंधा के बीज बिखेरने पर लाभ का कुछ अंश खर्च किया है? हम सभी को जागरूक होना होगा। जंगलों का प्रहरी बनकर अपनी प्राकृतिक सम्पदा का रक्षक बनना होगा। जल्दी ही यह नियम आने वाला है कि जो भी कोई कुछ भी जड़ी–बूटी बेचने बाजार में आएगा तो उसको यह प्रमाण पत्र देना होगा कि उसने यह जड़ी–बूटी जंगल से नहीं उखाड़ी अपितु फलां फलां खेत पर उगाकर लाई गई है। एक और लाभ जो इन उगाए गए औषधीय पौधों का है कि जब इन्हें जंगल से लाते हैं तो अलग अलग स्थानों से इकट्ठा करने के कारण इनमें Active Ingredient की मात्रा अलग अलग होती है। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में उन्नत प्रकार के माल की ही मांग है।

आयुर्वेद को लोगों तक ले जाने में नर्सरी वालों को एक सामाजिक दायित्व निभाना होगा। नर्सरी मालिक कुछ औषधीय पौधे जैसे अश्वगंधा, शतावरी, सफेद मूसली, तुलसी, मरवाह, दमाबेल, कालमेद्य, मुलहठी, अदरक, हल्दी, पत्थरचटा, पत्थरचूर, सर्पगंधा, निम्बूघास, सदाहरी, स्टीविया, पसरकटेहरी, आदि के पौधे पोलीथीन बैग में तैयार करके उचित मूल्य पर उपलब्ध कराएं। ऐसा नहीं कि टी.वी. के माध्यम से आयुर्वेद का प्रचार करने वाले स्वामी रामदेव जी ने जब अश्वगंधा के पत्तों के रस का उपयोग मोटापा कम करने में बताया तो, दिल्ली की नर्सरी वालो ने अश्वगंधा के पौधों की कीमत 25 रू0 तक कर दी।

अभी तक नर्सरी वाले केवल सजावटी पौधों का ही व्यापार करते आए हैं। औषधीय पौधों की उपलब्धता पर उनका कभी ध्यान नहीं गया। बदलती स्थितियों में जब इन पौधों को घर–घर पहुंचाना है तो नर्सरी वालों की इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका और सामाजिक दायित्व हो सकता है। साथ में आर्थिक लाभ तो जुड़ा ही है।

इन पौधों को घर के पिछवाड़े सहवाटिका में लगाकर Primary Health Care का अंग बनाया जा सकता है ताकि बीमारी आने ही ना पाये। यदि जनमानस इन जड़ी–बूटियों का सेवन जारी रखे तो आजकल स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए किये जाने वाले खर्च से बचा जा सकता है। कालमेद्य खून साफ करने की अति उत्तम दवा है। यदि चार पत्ते मौसम बदलते समय खाएं तो बच्चों व बड़ों में होने वाला ज्वर, फ्लू और वायरल बुखार आदि से बचा जा सकता है। पुदीने और धनियां के पत्तों के साथ मरवाह के पत्तों की चटनी पेट के रोगों से मुक्त रखती है। नींबू घास के पत्तों की चाय से शरीर में रोग क्षमता बढ़ती है। इस तरह कई तरह के नुख्से हैं। तुलसी के पत्तों का प्रतिदिन प्रयोग शरीर को रोग मुक्त रखता है। नर्सरी वाले ना केवल इन साधारण एवं महत्वपूर्ण औषधीय पौधों को उपलब्ध करा सकते हैं बल्कि दुर्लभ और लुप्त हो रही पौध प्रजातियों को सुरक्षित रखने में भी सहायक हो सकते हैं। हमारे भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा विकसित औषधीय पौधों की उन्नत किस्मों के बीज, प्लांटिंग मैटीरियल जैसे कन्द, कंटिंग आदि का गुणनसंवर्धन कर इनको उपलब्ध करा सकते हैं। Central Institute for Medicinal and Aromatic Plants, Lukhnow से (तुलसी सीम आयु, मरवाह

सीम सोमया, खस, नीबू घास, पामारोजा, सदाबहार, भूमि आंवला की उन्नत किस्मों के लिए) Regional Reseach Lab. Canal Raod, Jammu (खस, नीबू घास, जावा घास, पामारोजा और तुलसी की अनेक किस्मों के लिए) Haryana Agricultural University (मुलेहठी) National Research Centre in Med. and Aronatic Plants, Borivar, Gujarat, National Institute for Pharmaceuitical Education and Research, Mohali (PB) से (ऐसपैरेगस एडसकेनडीन, ब्राहमी, मण्डकपर्णी, दमाबेल, अगनीमंथ) अच्छी व उन्नत किस्मों को प्राप्त कर अपने अपने क्षेत्रों में Multiply कर पौधों को उपलब्ध कराया जा सकता है। अधिक मात्रा में भी उत्पादन कर किसानों को भी दिया जा सकता है। आने वाले समय में Quality Plant Material की अधिक मांग होगी और सभी को तैयार रहना होगा। Director, CIMAP (डा0 खनूजा) ने अक्टूबर में CIMAP Lucknow द्वारा आयोजित NIM (National Interactive Meet 2004) में यह घोषणा की थी कि संस्थान शीघ्र ही कुछ चुनी हुई Seed Companies को संस्थान द्वारा विकसित औषधीय पौधों के बीजों का Multiplication के लिए Licence भी देगी ताकि यह Accredited Centres वैज्ञानियों के देखरेख में पूर्ण गुणवत्ता वाले औषधीय पौधों के बीज पैदा कर किसानों को दे सकें। जिस प्रकार सब्जियों, दलहन और अनाज के बीजों पर Seed Act लागू है उसी प्रकार इन कम्पनियों पर भी Seed Act लागू होगा। तभी गुणवता कायम होगी। भारत फिर से विश्व गुरू बन सकेगा। चीन की तरह हम भी 21वीं सदी में औषधीय पौधों के विश्व स्तरीय व्यापार में अपनी पकड़ बना पाएंगे। ईमानदार निष्ठावान व्यक्तियों की आवश्यकता है। वैसे तो कुछ युवा वैज्ञानिक नौकरी छोड़कर इस व्यवसाय में आ रहे हैं परन्तु किसानों को चौकन्ना बनना होगा। किसानों के ही समूह बनाने होंगे जो Marketing भी देख सकें। महाराष्ट्र की तरह सहकारिता का सहारा लेना होगा। जन–मानस को यदि जड़ी–बूटियों का प्रयोग दिनचर्या में बता दिया जाय तो देश में ही एक बहुत बड़ा Internal Market खड़ा किया जा सकता है।

संदर्भ

1. प्राथमिक स्वास्थ्य में उपयोगी 51 औषधीय पौधे – जीवनय संस्थान लखनऊ
2. आयुर्वेद का प्राण, वनौषधी ज्ञान – शांती कुन्ज, हरिद्वार
3. औषधीयॉ – शान्ति कुंज, हरिद्वार
4. गमलों में स्वास्थ्य – शान्ति कुंज, हरिद्वार